Integral Research (Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal)
Journal home page: https://integralresearch.in/ ISSN:XXX-XXX, Vol. 01, No. 02, April.2024

बाल साहित्य का स्वरूप एवं संवर्धन के आयाम

डॉ० श्रीकांत मिश्र[1]
असि प्रोफेसर, हिन्दी, एस.एस.पीजी कालेज, शाहजहाँपुर
डॉ० आलोक मिश्र[2]
प्रोफेसर, हिन्दी एस. एस.पीजी कालेज शाहजहाँपुर

Abstract (सार)

सच्चा बाल साहित्य बच्चों की अपनी अभिव्यक्ति तथा दर्शन है, बालक जन्म से ही ईश्वरीय गुणों से संपन्न होता है, उसे राग-द्वेष भेद-भाव, कपट-पाखंड आदि कदाचित् प्रिय नहीं, निःसंदेह बालक ईश्वर की निर्मल कृति है। नक्त प्रवर गोस्वामी तुलसीदास जी का मत है कि निर्मल मन वाला ही ईश्वर को परम प्रिय होता है। बाल साहित्य की प्राचीन धरोहर पंचतंत्र हितोपदेश, कथा सरित्सागर सिंहासन बत्तीसी आदि में भले ही स्वतंत्र रूप से बाल साहित्य परिलक्षित न होता हो लेकिन इसकी पूर्ति इन ग्रंथों के माध्यम से हुई। पंचतंत्र के सुविज्ञ रचयिता और कदाचित बाल मनोविज्ञान पर सर्वप्रथम ध्यान देने वाले मनीची पं० विष्णु शर्मा ने पंचतंत्र की रचना मनोरंजन के माध्यम से शिक्षा देने के उद्देश्य से की थी। हितोपदेश के कथा आमुख में लेखक के विचार ध्यातव्य है विद्या प्राप्ति का सही समय बचपन है। जिस प्रकार नए बर्तन पर खींची गई लकीर बर्तन पर से कभी नहीं मिटत्ती उसी प्रकार मनुष्य के बचपन में उस पर पड़े संरकार जीवन भर बने रहते है, कभी नहीं मिटते। प्रस्तुत शोध पत्र बाल साहित्य के स्वरूप और संवर्ध की एक संक्षिप्त पड़ताल है।

Keywords: बाल साहित्य, बालक, संस्कार, बाल साहित्यकार, बचपन, मनोरंजन ।

आधुनिक युग आपाधापी का युग है। सर्वत्र विसंगतियाँ विद्यमान है. आशंकाओं ने संपूर्ण विश्व को आक्रांत कर रखा है। एक तरह से मानवता विकलांग होती जा रही है और मानव मूल्य खंड-खंड।

इन परिस्थितियों से विश्व का भविष्य अर्थात बालक भी अछूता नहीं है। बालक का बालपन और उसकी स्वाभाविक हैसी लुप्त होती जा रही है। बालक को उसका बालपन लौटाने और विश्व के भविष्य को संरक्षित करने का एकमात्र उपाय है उत्तम बाल साहित्य, क्योंकि बाल साहित्य न केवल बालकों का मनोरंजन करता है, अपितु उनमें संस्कारों का बीजारोपण कर उन्हें अपने राष्ट्र के सुयोग्य नागरिक के

[1] Corresponding Author: डॉ० श्रीकांत मिश्र
E-mail: shrikantmishra@gmail.com
Received 21 March 2024; Accepted 22 April 2024. 2024 Available online: 30 April, 2024.
Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension)
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

Integral Research (Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal)
Journal home page: https://integralresearch.in/ ISSN:XXX-XXX, Vol. 01, No. 02, April.2024

रूप में सुनिर्मित भी करता है। बाल साहित्य का अर्थ है - यह साहित्य जी सरल सहज भाषा में बाल पाठकों का मनोरंजन एवं मार्गदर्शन करने की शक्ति रखता हो।

सच्चा बाल साहित्य बच्चों की अपनी अभिव्यक्ति तथा दर्शन है, बालक जन्म से ही ईश्वरीय गुणों से संपन्न होता है, उसे राग-द्वेष भेद-भाव, कपट-पाखंड आदि कदाचित् प्रिय नहीं, निःसंदेह बालक ईश्वर की निर्मल कृति है। नक्त प्रवर गोस्वामी तुलसीदास जी का मत है कि निर्मल मन वाला ही ईश्वर को परम प्रिय होता है।

निर्मल मन जन सो मोहि पाया।

मोहि कपट छल छिद्र न भावा।।[1]

परमात्मा के विषय में जानना कठिन कार्य है, उसी प्रकार बाल मन को समझना भी सरल नहीं। यह प्रसंग ध्यान देने योग्य है कि परमेश्वर स्वतंत्र एवं चमत्कारी लीलाओं का कर्ता है। सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाए तो यह गुण बालक में भी विद्यमान रहते हैं। कभी तो वह चंद्र को पाने के लिए रोता है तो थोड़ी ही देर में अपना प्रतिबिंध देखकर भयभीत हो जाता है। रोटी, पैसों आदि के वृक्ष कोल्ड ड्रिंक के अरने चाकलेट के पहाड़, अंतरिक्ष यात्रा तथा परीलोक भ्रमण बालमन को जो आनंद देते हैं वह वर्णनातीत ही कहा जाए तो उचित होगा। बालक के मुख से फूटने वाला प्रत्येक वाक्य वेद वाक्य के समान ही कहा जाए क्योंकि बालक प्रकृति के सबसे निकट एवं ईश्वर का रूप होता है। इस प्रकार अलौकिक प्राणी के लिए लिखा जाने वाला साहित्य दिव्य ही हो जिस को पढ़कर वे प्रकृति के सहचरों पशु-पक्षी, पेड-पौधों आदि के साथ चहचहा सकें, उनका कोमल मन कुसुम की भाँति खिल उठे तथा बचपन की मधुर यादों के साथ वह भोगवाद में अपंग मानवता को सहारा देने के लिए सच्चे भारतीय सिपाही की भाँति खड़े हो सकें और उसे स्वार्थ की आँधी-तूफान तिल भर भी न हटा सकें। इन सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाला साहित्य ही श्रेष्ठ बाल साहित्य है। विहंगम दृष्टि से देखा जाए तो बाल साहित्य संपूर्ण मानवता का संरक्षक है। बाल साहित्य भले ही किसी भी राष्ट्र या संस्कृति का क्यों न हो, बच्चे उन्मुक्त भाव से उसके प्रति लालायित रहते हैं। विगत दिनों प्रकाशित हैरी पॉटर इसका सशक्त उदाहरण है जिसे संपूर्ण विश्व के बालक सोत्साह अपना रहे हैं। भारत की अनूठी बाल साहित्य कृति पंचतंत्र तो इसके प्राचीन उदाहरण मेस्वरूप है. जिसका अनुवाद विश्व की न जाने कितनी भाषाओं में हो चुका है और यह सर्वत्र लोकप्रिय है। अस्तु, बाल साहित्य के विहंगम और संपूर्ण अर्थ को अनुभूत और सुस्पष्ट करने के लिए बाल साहित्य के प्रति विविध दृष्टिकोणों का अनुशीलन आवश्यक होगा। एत्तदर्थ हम यहीं पर न कंवल भारतीय अपितु पाश्चात्य विद्वानों के भी बाल साहित्य विषयक विचारों को ससम्मान उद्धृत करते हुए वैचारिरक नवनीत प्राप्त करने का प्रयत्न करेंगे।

बाल साहित्य की प्राचीन धरोहर पंचतंत्र हितोपदेश, कथा सरित्सागर सिंहासन बत्तीसी आदि में भले ही स्वतंत्र रूप से बाल साहित्य परिलक्षित न होता हो लेकिन इसकी पूर्ति इन ग्रंथों के माध्यम से हुई। पंचतंत्र के सुविद्वा रचयिता और कदाचित बाल मनोविज्ञान पर सर्वप्रथम ध्यान देने वाले मनीची पं० विष्णु शर्मा ने पंचतंत्र की रचना मनोरंजन के माध्यम से शिक्षा देने के उद्देश्य से की थी। हितोपदेश के कथा आमुख में लेखक के विचार ध्यातव्य है विद्या प्राप्ति का सही समय बचपन है। जिस प्रकार नए बर्तन पर खींची गई लकौर बर्तन पर से कभी नहीं मिटत्ती उसी प्रकार मनुष्य के बचपन में उस पर पड़े संरकार जीवन भर बने रहते है, कभी नहीं मिटते। इस दृष्टि से मैं बच्चों की कथाओं के माध्यम से विविध विद्याओं की शिक्षा देने के उद्देश्य से हितोपदेश की रचना कर रहा हूँ। यन्नवैमार्जन लग्नः संस्कारी नान्यथाभवेत। कथाच्छलेन बालकाना नीतिस्तदिह कथ्यतेद्ध [2]

निश्चय ही विद्या प्राप्ति का उचित समय बचपन ही होता है परंतु क्या इस विद्या के बोझ से बचपन के सुखद क्षणों का होन कर दिया जाए? तब प्रश्न उठता है कि बचपन की रक्षा के लिए क्या किया जाए? इसका उत्तर मात्र यही होगा कि बच्चों को मनोरंजन प्रधान साहित्य दिया जाए जिसमें अदृश्य रूप से शिक्षा का पुट भी समाविष्ट रहे। अगर दूसरे शब्दों में कहा जाए तो बालकों को विद्या दान बही रोचकता एवं सरलता के साथ किया जाए जिससे उनका बचपन जीवित रह सके।

बाल साहित्य के संबंध में पं० सोहनलाल द्विवेदी जी का परिभाषीकरण सूक्ष्मताओं से अनुप्रमाणित होने के कारण पूर्णतः सैद्धांतिक और विचारणीय है-

सफल बाल साहित्य वही है जिसे बच्चे सरलता से अपना सके और भाव ऐसे हो जी बच्चों के मन भाएँ। यो ती अनेक साहित्यकार बालकों के लिए लिखते रहते हैं, किंतु सचमुच जो बालकों के मन की बात बालकों की भाषा में लिख दे, वहीं सफल बाल साहित्य लेखक। [3]

इसी संदर्भ में बाल साहित्य विचारक बालशौरि रेड्डी के विचार भी तर्क पूर्ण है मेरी दृष्टि में बाल साहित्य यह है जो बच्चों के पढ़ने योग्य हो, रोचक हो, उनकी जिज्ञासा की पूर्ति करने वाला हो। बच्चों के साहित्य में अनावश्यक वर्णन न हो, उसमें बुनियादी तत्वों का चित्रण हो। कथावस्तु में अनावश्यक पैचौदगी न हो, वह सरल, सहज और समझ में आने वाला हो. सामाजिक दृष्टि से स्वीकृत तथ्यों को प्रतिपादित करने वाला हो।"[4]

बालसाहित्य के जाने माने व्यक्तित्व आरिगपूडि नै बदलते समय-समाज के अनुरूप साहित्य की आवश्यकता पर बल दिया तथा श्रेष्ठ साहित्य उसी को माना जी बालकों की रुचियों के साथ-साथ मानव मूल्यों की प्रतिष्ठा करने में सक्षम हो। डाॅ० हरिकृष्ण देवसरे के शब्दों में आरिगपूजित ने बच्चों की बदलती रुचियों के अनुरूप बाल साहित्य रचना की आवश्यकता पर जोर दिया है। जिससे उनका मनोरंजन तो हो ही, उनकी जिज्ञासा तृप्ति और ज्ञान वृरि भी हो। ये सभी विचार इस एक बिंदु पर निश्त्वय

ही जुठते हैं कि आज बाल साहित्य का अर्थ केवल बच्चों का मनोरंजन करना और उनकी ज्ञान-पिपासा को शांत करना ही नहीं है बल्कि उन्हें आधुनिक जीवन और समाज के मूल्यों से जोड़ना भी है। [5]

प्रख्यात बाल गीतकार निरंकार देव सेवक बाल साहित्य की मौलिक व्याख्या करते हुए लिखते हैं बाल साहित्य का अर्थ है वह साहित्य जिसमें बच्चों की रुचि, जिज्ञासा, इच्छा-आकाँक्षा, राग-द्वेष, भावना कल्पना की अभिव्यक्ति हो। [6]

डॉ० राष्ट्रबंधु के विचार से रोचककता एवं प्रेरणा बाल साहित्य का प्रमुख अंग है बाल साहित्य रोचक और प्रेरक दोनों होना चाहिए क्योंकि यदि बाल साहित्य रोचक नहीं होगा तो बच्चों को अपनी और आकर्षित नहीं कर सकेगा।[7]

बाल साहित्य की सर्वाधिक सशक्त परिभाषा तो भगवती प्रस्तद बाजपेई की है जो अर्थ, स्वरूप और मानदंडों को एक साथ व्यजित करने में समर्थ है बाल साहित्य लिखना बढ़ा ही कठिन कार्य है। भाषा क्लिष्ट हो जाए तो लेखक को अपनी कुर्सी छोडनी पठे, भावों में स्वाभाविक सारल्य न हो, अभिव्यंजना में न झलक पड़े तो लेखक कलाकार नहीं घसियारा बन जाए। इन दोनों गुणों में पारंगत होने पर भी यदि कथन में नई पौध के नव निर्माण की भावना न हुई तो भी लेखक का प्रयास कालांतर में तीन कौती का बन जाता है।"[8]

बच्चों के कीर्तिवाही कवि द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी के विचार भाव और गांभीर्य के सहज प्रतिदर्श सदृश है- बाल साहित्य मेरी दृष्टि में यह साहित्य है जो चार से चौदह तक के बालक-बालिकाओं के लिए कविता, कहानी, नाटक, निबंध, जीवनी, वार्तालाप आदि विधाओं में लिखा गया हो, जो पाठकों की मनोरंजन एवं आनंद प्रदान करते हुए उनका संर्वागीण विकास करें और साथ ही बीरिक विकास में भी सहायक हो।"[9]

बाल साहित्य की स्थापना हेतु शासकीय प्रोत्साहन को दिशा देने कले विनोद चंद्र पांडेय विनोद लिखते हैं जिस प्रकार प्रत्येक प्रवाहमान धारा नदी नहीं होती, उसी प्रकार प्रत्येक बाल रचना बाल साहित्य की कोटि में नहीं आती। नदी के लिए आवश्यक है जलराशि, बाल साहित्य के लिए आवश्यक है पारदर्शी बाल मन की पारदर्शी भावनाओं की अभिव्यक्ति [10] प्रख्यात बाल साहित्यकार एवं आलोचक डॉ० हरिकृष्ण देवसरे का मानना है मैं बाल साहित्य लिखते समय पूरी सजगता से यह देखने का प्रयास करता हूँ कि में जिन बच्चों के लिए लिख रहा हूँ उन बच्ची का आज का परिवेश क्या है. उनकी पसंद-नापसंद क्या है उनकी कल्पना की उठान क्या है, उनकी भाषा क्या है, ये समाज और परिवार की घटनाओं के प्रति किस तरह की प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं। अपने माता-पिता, स्कूल के अध्यापक आदि के बारे में वे क्या सोचते हैं। और अब तो यह भी जानना बहुत जरूरी हो गया है कि हमारे देश मैं जो तमाम प्रमुख राजनीतिक घटनाएँ घटती है उनके बारे में उनकी अपनी प्रतिक्रिया क्या है २ इन मुद्दों को आत्मसात

करते हुए जब हम आज के बच्चे के लिए कोई रचना लिखते हैं तो यह निसंदेह पढ़ी जाएगी क्योंकि हम उनकी नब्ज पकड़ लेते हैं। [11]

बाल साहित्य पर शोध प्रबंधों के कुशल निर्देशक डॉ० राजकिशोर सिंह ने बाल साहित्य की परिभाषीकरण करते हुए उसके अलिखित रूम को भी समाहित किया है बाल साहित्य से आशय बच्च्चों के लिए लिखे जाने वाले साहित्य से है। पर लिखने-पढ़ने की उम्र से पहले भी लोरियों और दादी-नानी की कहानियों के रूप में एक शिशु बाल साहित्य के श्रव्य रूप से परिचय प्राप्त करता है। पशु-पक्षी, राजा-रानी, परी और देव-दानव की कहानियों उसे बहुत भाती है। अनाम रचनाकारों की लोक कथाएँ और लोरियाँ ही वह परंपरागत अलिखित बाल साहित्य है जो बाल मन को सर्वप्रथम अनुरंजित करता है। [12]

बाल साहित्य के समर्पित लेखक डॉ० नागेश पांडेय संजय बाल साहित्य के समग्र अर्थ की ओर संकेत करते हुए लिखते हैं समेकित रूप में बाल साहित्य का सीधा-सादा अर्थ हुआ शिशु, बालक और किशोर मानसिकता के बालकों हेतु रचित साहित्य। [13]

बाल साहित्य आलोचना के क्षेत्र में सर्वाधिक कृतियों के रचयिता डॉ० सुरेंद्र विक्रम का मानना है जो साहित्य बच्चों के मन और मनोभाव को परखकर लिखा गया हो, उसे हम बाल साहित्य की संज्ञा दे सकते हैं। [14]

पाश्चात्य देशों में बाल साहित्य का महत्य अधिक समझा गया। जो विस्तार भारत में उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्थ में हुआ वह पाश्चात्य देशों में बहुत पहले हो चुका था। पाल हैजार्ड ने बाल साहित्य का महत्य समझा। इसीलिए उसने कहा था बच्चों की पुस्तकों के द्वारा इंग्लैंड का पुनर्निमाण किया जा सकता है। अमेरिका, इंग्लैंड और रूस जैसे देश बालक के महत्व को समाते थे तभी तो उन्होंने अपने यहाँ बच्चों के अनुकूल साहित्य-भूमि निर्मित की और बाल विकास को राष्ट्र विकास की दृष्टि से देखा।

डॉ० हेनरी स्टील कोमागर के शब्दों में बाल साहित्य क्या है? क्या यह वह साहित्य है जो विशेषकर बच्चों के लिए लिखा गया हो-यानी परी और रहस्य कथाएँ, शिशु गीत और गीत् नीति की पुस्तकें, स्कूल या खेल के मैदान या किसी लंबी यात्रा की कहानी आदि वास्तव में यह पूरे साहित्य के रूप में है. जिसे बच्चों ने अपना लिया है। इस में कुछ ऐसा है जिसमें उनका बराबरी का हिस्सा है और कुछ पर उन्हीं का पूरा अधिकार है। सही साहित्यिक अर्थों में यह उन्हीं का साहित्य है, क्योंकि अंत में न तो माता-पित्ता, न अध्यापक न उपदेशक और न ही लेखक इस बात का निश्चय कर पाते हैं कि यह बाल साहित्य है। इसे तो बच्चे स्वयं ही तय करते हैं कि उनका साहित्य क्या और कैसा हो। [15]

डॉ० कोमागर बाल साहित्य को बच्चों की पसंद का साहित्य मानते हैं। एक अन्य विद्वान बर्नाड शॉ बाल साहित्य को बालक के स्वाभाविक चरित्र का संरक्षक मानते हैं।

बर्नाड शॉ का कथन है संसार में सबसे बड़ा गर्भपात करने वाला वह व्यक्ति होता है। जो बच्चे के स्वाभाविक चरित्र को किसी अन्य दिशा में मोठने का प्रयत्न करता है।" [16]

समीक्षक हार्वे डार्टन के अनुसार बाल साहित्य से मेरा अभिप्राय इन प्रकाशनों से है जिनका उद्देश्य बच्चों को सहज रीति से आनंद देना है न कि उन्हें मुख्य रूप से शिक्षा देना अथवा उन्हें सुधारना अथवा उन्हें उपयोगी रीति से शांत करना।" [17]

'जब तुम बच्चों के लिए लिख रहे हो तो उस विशेष अवसर के लिए विशेष शैली मत अपनाओ। अपनी पूरी क्षमता से सोचो, पूरी क्षमता से लिखो और सारी वस्तु को सजीव हो कर आने दो।" [18] आनातोले फांसद्ध

भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों के विचारों को गहनता से देखा जाए तो कहीं न कहीं पर दोनों वर्ग एक ही उद्‌देश्य की पूर्ति करते हुए प्रतीत होते हैं। इनका शब्दमय शरीर भले ही भिन्न हो लेकिन अर्थरूपिणी आत्मा सर्वत्र एक ही है।

गतिशील समय चलता ही रहेगा जिसके साथ सारा विश्व चलायमान है। इसी गतिशीलता के कारण कितने पक्षी अपने नौठ त्याग चुके होंगे, माता गंगा की गोद से कितना

जल सागर की सीमाओं में समा गया, जाने कितने प्रभात आए और गए। इन सब के साथ बाल साहित्य ने भी अपनी रूप-राशि को बदला है जिसके कारण अर्थ में भी परिवर्तन आवश्यक है। जो साहित्य अपने आप को समाज के साथ परिवर्तित नहीं कर सका इतिहास साक्षी है उसने अपना स्वरूप ही नष्ट कर लिया। समय परिवर्तन ने बाल साहित्य के अर्थ को और भी गुरुतर किया।

आज सच्चे अर्थों में वही बाल साहित्य कहा जाएगा जो बालकों के सामने उपस्थित चुनौतियों से भली-भाँति निपट सके और बाल मन को आकर्षित करने की सामर्थ्य रखता हो।

बाल साहित्य के विद्वान बाल साहित्य में श्रेष्ठता के लिए निम्नलिखित गुणों को आवश्यक मानते है -

१. बालोपयोगी मनोरंजन

2. समयानुकूल ज्ञान प्राप्ति

3. जीवनोपयोगी प्रेरणा

निश्चय ही यह तीनों तत्व बाल साहित्य के मूल अंग है परंतु आज बाल साहित्य के समक्ष कुछ नई चुनौतियाँ सुरसा की भाँति मुँह फैलाए हुए खड़ी हैं। उनका उत्तर वर्तमान बाल साहित्य को बड़ी बुदिमत्ता से देना होगा। आज का बच्चा बाल साहित्य को पढ़ना नहीं चाहता क्योंकि उसे अपने अभिभावकों के द्वारा इसके महत्व को नहीं समझाया गया। इस कारण के अतिरिक्त भी अन्य कई कारण ऐसे हैं जिनसे

Integral Research (Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal)
Journal home page: https://integralresearch.in/ ISSN:XXX-XXX, Vol. 01, No. 02, April.2024

बालक अपने लिए इस उत्तम साहित्य परंपरा का चयन नहीं कर पा रहा है जैसे टी०वी०, डिश, कंप्यूटर वीडियो गेम आदि ने बच्चों को अपनी ओर आकर्षित किया है। आज बालकों को बाल साहित्य का महत्व समझाने के लिए समाज को जागरूक होना ही पड़ेगा अन्यथा निरंतर गिर रहे नैतिक मूल्य समूल नष्ट हो जाएँगे, लेकिन जब चिड़ियाँ खेत चुग जाएँगी तब पछताने से क्या होगा?

आज सच्चा बाल साहित्यकार परोपकारी संत की भौति बालकों को बहुपयोगी साहित्य देकर उनके कोमल बचपन की रक्षा तो कर ही रहा है साथ ही साथ असमय उत्पन्न होने वाली आधि-व्याधि से भी बचाने का भरसक प्रयास कर रहा है। स्वार्थ तथा उपभोगवादी विचारधारा ने समूचे विश्व को दग्ध किया है। इस जलन से बचाने वाला यदि कोई सरल और मजबूत उपाय है तो यह कि आने वाली पीढ़ी को शीतल व सुखद बाल साहित्य दिया जाए। सुंदर बचपन एवं सुनहरे भविष्य के लिए इस कठिन समय में बाल साहित्य के प्रति बच्चों का आकर्षण आवश्यक ही नहीं वरन परमावश्यक कहा जाए। आज समय की माँग के अनुरूप बाल साहित्य का अर्थ विस्तार हो रहा है। थोड़े शब्दों में कहा जाए तो मनोरंजन, ज्ञान, प्रेरणा तथा समसामयिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाला साहित्य ही सच्चा बाल साहित्य कहा जा सकता है।

बाल-साहित्य संवर्धन-पोषण के माध्यम :-

बाल साहित्य समाज की अमूल्य निधि है इस निधि का पोषण और संवर्धन अनादिकाल से ही जारी है भले ही वह सबसे पहले बालक के रोने पर उसकी माता के मुख से लोरी के रूप उत्पन्न हुआ हो अथवा बालकों की मनोरंजक एवं ज्ञानवर्धक मौखिक कहानियों ने बाल-साहित्य का संवन किया हो। संस्कृत साहित्य में भले ही अलग से बच्चों के लिए कुछ अधिक न मिलता हो परन्तु बहुत कुछ संस्कृत साहित्य में संरक्षित है। लोक साहित्य ने बाल साहित्य को सही अर्थों में स्वरूप प्रदान किया। अनेक भाषाओं से पोषित यह साहित्य आज संवृरि के नित नवीन आयाम स्थापित करता हुआ विकास पथ पर अग्रसर है। बाल-साहित्य संवाँन एवं पोषण के प्रमुख माध्यम-

1. परिवार
2. संस्कृति
3. समाज
4. मनोविज्ञान
5. शिक्षा
6. विद्यालय
7. पुस्तकें
8 पत्र-पत्रिकाएँ
9. पुस्तकालय
10. आकाशवाणी एवं दूरदर्शन
11. संस्थाएं एवं यौजनाएँ

परिवार - परिवार समाज की सबसे छोटी पर सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण इकाई होता है। परिवार से समाज और समाज से राष्ट्र का निर्माण होता है। बच्चों में अनुशासन व अन्य गुणों का विकास सबसे पहले परिवार से ही शुरु होता है। परिवार मनुष्य की पहली पाठशाला तथा मात्ता उसकी प्रथम गुरू होती है। माता के द्वारा सुनाई जाने वाली लोरी या प्रभाती का मीठा दुलार भरा स्वर बच्चे को प्रसन्न ही नहीं करता बल्कि आगे और कुछ सुनने को लालायित भी करता है और यही लालसा आगे चलकर सर्वांन एवं पोषण में सहायक सि (होती है। यदि माँ ने थपकी के साथ लोरी न गाई होती, नानी-नाना ने कहानी न सुनाई होती तो बाल साहित्य का अस्तित्व ही संकट में होता। अतः परिवार को बाल साहित्य का जनक कहना उचित ही प्रतीत होता है।

संस्कृति- संस्कृति बच्चों को आचार-विचारों, मान्यताओं, त्यौहारों, पों के माध्यम से बहुत कुछ सिखा देती है। राष्ट्रीय पाँ पर राष्ट्र प्रेम, समाजिक पर्यो पर भाई-चारे आदि की शिक्षा हमें संस्कृति के माध्यम से ही प्राप्त होती है। कुल मिलाकर संस्कृति से विहीन समाज आदर्श समाज नहीं हो सकता जो बाल साहित्य की प्रथम सर्त है। सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाए ती बाल साहित्य सांस्कृतिक प्रगति का एक अंग है।

समाज मनुष्य एक सामाजिक प्राणी इस कारण है क्योंकि वह नियंत्रण में रहता है. कानूनों का पालन करता है और समाज के आदर्श नियमों को मानता है पी० एच० लैडिस का यह कथन समाज की भूमिका के महत्व को प्रकट करता है। समाज के सामाजिक जन लौक कथाओं द्वारा हमें शिक्षित कर रीति-रिवाज एवं व्यवहार का एक उचित माध्यम सिखाते हैं. समाज में हमारा पठोस एवं सामाजिक परिस्थितियों के साथ-साथ हमारे संबंध बाल साहित्य सूजन के महत्वपूर्ण अंग है। समाज में ही रहकर व्यक्ति, वस्तु एवं साहित्य का अस्तित्य जीवित रह सकता है। अनादि काल से साहित्य का सर्वांन एवं पोषण समाज के द्वारा निरंतर चल रहा है।

मनोविज्ञान बाल मनोविज्ञान को समझे बिना बाल साहित्य सृजन संभव नहीं, यदि लेखक बालक के स्वभाव, व्यवहार आदि से एकता स्थापित नहीं कर पा रहा है तो वह श्रेष्ठ साहित्य नहीं दे सकता। बाल साहित्य एवं बाल मनोविज्ञान दोनों एक दूसरे के पर्याय ही माने जाते हैं। यदि बाल मानोविज्ञान को समझे बिना साहित्य रचा गया तो उसे बच्चे स्वतः ही नकार देंगे।

शिक्षा बाल साहित्य के संवन तथा पोषण में शिक्षा का महत्व सर्वविदित है। शिक्षा - बाल साहित्य का मूल है, शिक्षा के अभाव में बाल साहित्य का विशाल वृक्ष उगने से पूर्व ही नष्ट हो जाएगा। शिक्षित व्यक्ति अथवा वर्ग बाल साहित्य के संर्वांन तथा पोषण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है।

विद्यालय नाम से ही स्पष्ट है कि विद्या का घर अर्थात् जहाँ समाज का भविष्य अर्थात् बच्चे शिक्षा ग्रहण करने के लिए एकत्र होते है। कहा गया है-विद्या से विनय आती है और विनय से पात्रता आती है। विद्यालय में होने वाले साहित्यिक कार्यक्रमों में बालकों को नई राह मिलती है तथा विद्यालय में

पुस्तकालय बच्चों को साहित्य के प्रति रुचि जागृत कराता है। बालकों का बौधिक परिष्कार एवं ज्ञान-विज्ञान में आस्था उत्पन्न होती है जिसके फलस्वरूप बाल साहित्य के प्रत्ति प्रेम जागृत होता है।

पुस्तकें - मानव जीवन में पुस्तकें जीवित देवता के रूप में कार्य करती हैं। बाल साहित्य पुस्तकों में सरक्षित सहता है और पुस्तकों के माध्यम से ही बच्चे अपनी रुचि का साहित्य पढ़ पाते हैं। टूट रहे संबंधों और व्यस्तता के समय में बाल साहित्य सुनाने वालों का अभाव दिखता है जिसकी पूर्ति पुस्तकें कर रही हैं। इन सभी कारणों से ही स्वामी विवेकानंद जी पुस्तकों को जीवंत देवता मानते थे और वे देवता हो भी क्यों ना? देवता का अर्थ होता है देने वाला। पुस्तके अपने अंदर संरक्षित साहित्य से निरंतर सभी को कुछ न कुछ प्रदान करती रहती है।

पत्र-पत्रिकाएँ पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से संचित साहित्य समाज में सर्वत्र सरलता से पहुँच जाता है। बाल साहित्य का निरंतर प्रकाशन पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से होता खता है। कुल मिलाकर देखा जाए तो बाल साहित्य ही क्यों किसी भी साहित्य का संवाँन एवं पोषण पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से ही होता रहता है।

पुस्तकालय पुस्तकालय अर्थात् पुस्तकों का घर, जहाँ पुस्तकों की विभिन्न श्रेणियों,

प्रकार तथा उपयोगिता से परिपूर्ण साहित्य भंडार तो रहता ही है साथ में साहित्य संरक्षण, संवाँन जैसे कार्य सरलतापूर्वक चलते रहते हैं। पुस्तकालयों में बच्चे अपने पाठ्यक्रम से भिन्न साहित्य पढ़कर नवीन जानकारियों और अपनी सोच का दायरा बढ़ाते है। आज के युग में जहाँ पुस्तकों के मूल्य आम आदमी की पहुँच से दूर है, साथ में अच्छी पुस्तकों को ढूंढना और प्राप्त करना निश्चय ही दुरूह कार्य है. ऐसी स्थिति में साहित्य को आम आदमी की पहुँच तक लाने वाला यदि कोई माध्यम है तो यह मात्र पुस्तकालय ही कहा जाएगा। प्रचार-प्रसार की दृष्टि से पुस्तकालय साहित्य के परम हितैषी ही कहे जाऐंगे। निश्चय ही बाल साहित्य के विषय में भी पुस्तकालय महती भूमिका अदा करता है। इसलिए इसे सम्वनि और पोषण का प्रमुख माध्यम कहा जाता है। आकाशवाणी एवं दूरवर्शन - बाल साहित्य के संवर्धन में जहाँ पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं का एक विशेष स्थान है, वहीं आकाशवाणी और दूरदर्शन ने भी उसके उन्नयन, प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। देश भर में आकाशवाणी का कोई ऐसा केंद्र नहीं है जहाँ से अपने राज्य की भाषा में बच्चों के लिए सप्ताह में दो विशेष कार्यक्रम प्रसारित न किये जाते हैं। प्रसिद्ध फिल्म निर्माता राहुल बोस बाल फिल्मों के माध्यम से समाज में जागरण की लहर लाने के लिए उत्तम बाल फिल्मी को अनिवार्य मानते हुए कहते हैं- आज बाल फिल्मों के सामने सबसे बड़ी समस्या पैसे की है। एन एफ डी सी या चिल्ड्रेस फिल्म सोसायटी फिल्म निर्माताओं के साथ मिलकर बाल फिल्म बना सकती है। यह काफी उपयोगी रहेगा। तब देखिएगा, भारत में भी बनेंगी विश्व स्तर की बाल फिल्में। आज के बच्चों को बच्चा समझना बेवकूफी है। एक्स बाक्स और हीरी पॉटर के साथ बड़े

हो रहे बच्चों को इसी स्तर का मनोरंजन भी चाहिए। आकाशवाणी एवं दूरदर्शन बाल साहित्य की गुणवत्ता को परख कर प्रचारित-प्रसारित करने कले प्रमुख माध्यम है।

संस्थाएँ एवं योजना बच्चों के लिए कई संस्थाएँ कार्य कर रही है जो उनके स्वर्णिमभविष्य की पहल करती है, यह संस्थाएँ बाल कल्याण से संबंधित कार्यक्रमों का आयोजन कर बालकों के जीवन को सुखद बनाने का प्रयास करती है। इसी प्रकार सरकार द्वारा भी कुछ योजनाएँ बाल कल्याण के लिए कार्य कर रही है जिसमें प्रमुख सर्वशिक्षा अभियान या स्कूल चलो आदि का महत्वपूर्ण योगदान है। यह सारे कार्यक्रम एक स्थान पर आकर बाल साहित्य के सवाँन एवं पोषण का कार्य करते हैं।

बाल साहित्य, साहित्य का अभिन्न अंग है। इसका पोषण और संवन साहित्य के साथ ही साथ होता रहा लेकिन लगभग दो-ढाई दशकों में बाल साहित्य को एक विशेष स्थान प्रदान करने के लिए जी सराहनीय प्रयास किये गये हैं, वे निश्चय ही बाल-साहित्य की उपलब्धि कही जाएँगी।

इस प्रकार हम देखते है कि बाल साहित्य का न केवल अपना स्वतंत्र अस्तित्व है बल्कि उसका क्षेत्र अत्यंत विहंगम एवं नित नूतन अक्षुण्य संभावनाओं से परिपूर्ण है। बाल साहित्य किसी भी दृष्टि से प्रौढ साहित्य से कमतर नहीं है। बाल साहित्य की महत्ता प्रौढ़ साहित्य की भौति केवल तात्कालिक ही नहीं अपितु उसका दूरगामी महत्व है। उत्तम साहित्य का अध्ययन करने वाले बालक अर्थात् भावी पीढ़ी कालांतर में राष्ट्र के सुयोग्य नागरिक के रूप में सुनिर्मित होकर उसकी आशातीत प्रगति और प्रतिष्ठा के क्षेत्र में अपना गरिमामयी योगदान प्रस्तुत करती है। बाल साहित्य के सार्वकालिक महत्व को नकारा नहीं जा सकता। बाल साहित्य के स्वरूप और सिद्दीत का अनुशीलन करने के उपरांत यह अत्यंत प्रासंगिक और पूर्णाचित होगा कि हम उसके गौरवमयी अतीत पर भी दृष्टिमात कर बाल साहित्य की अंतरंग यात्रा और उसके विविध आयामों का भी सहज संस्पर्श कर सके। एतदर्थ बाल साहित्य के ऐतिहासिक विवेचन के रूप में अगले अध्याय की संकल्पना की गई है जिसका अध्ययन आस्लाद प्रदायक तो होगा ही साथ ही बाल साहित्य के बहुतेरे अबूझ तथ्यी को भी उद्घाटित कर सकेगा।

संदर्भ

1 गोस्वामी तुलसीदास रामचरितमानस सुदरकांड, दो० 43/3 पृष्ठ 88

2 पं० नारायण शर्मा हितोंपदेश कथा आमुख पृ० 7

3 डॉ० हरिकृष्ण देवसरे हिंदी बात्य एक अध्ययन

4 डॉ० बालशौरी रेड्डी, बाल साहित्य सामाजिक मूल्यों की रक्षा लेख और समीक्षा सं. डॉ हरिकृष्ण देवसरेद्ध पृ० 27

5 डॉ० हरिकृष्ण देवसरे बाल साहित्य रचना और समीक्षा पृ० 6

6 श्री निरकार देव सेवक बाल गीत परंपरा विकास और संभावनाएँ लेखमाल साहित्य रचना हरिकृष्ण देवसरे पृ० 53

7 डॉ शेष पाल सिंह शेष साठोत्तरी हिंदी बाल साहित्य पृ० 16

8 डॉ राष्ट्रबंधु, मेरे प्रिय बालगीत पृ. 6

9. द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी बाल साहित्य की रूपरेखा, बालसाहित्य के विविध भायाम प्रधान सम्पादक विनोद चंद्र पाडेय, पृ०11

10. विनोद चंद्र पांडेय भारतीय भात साहित्य के विविध आयाम प्रस्तावना सेद्ध संपादक विनोद चंद्र पाठ्य

11. आजकल, नवंबर, 2006 पु० 15

12 डॉ० राजकिशोर सिंह हिंदी की श्रेष्ठ बानियाँ भूमिका संपादक डी० उषा यादव

13. डॉ० नागेश पांडेय संजय साहित्य: सिद्धहस्त कवि की किशोर व बाल कविताएं , लेखक उद्भ्रांत का बाल साहित्य : सृजन एवं मूल्यांकन संपादक जी प्रकाश भारती एवं डॉ० राष्ट्रबंधु पृ. 61

14 डॉ० सुरेद्र विक्रम हिंदी बाल पत्रकारिता उद्धव और विकास पृ. 9

15. डॉ० हरिकृष्ण देवसरे हिंािसाहित्य एक अध्ययन ५० 14

16. निरंकार देव सेवक बालगीत साहित्य, पृ 11

17. डॉ० सुरेंद्र विक्रम हिंदी बाल साहित्य विविध परिदृश्य पृ. 16

18 अनातोले फ्रांस ‘मधुमती जुलाई-अगस्त 67, पृ. 381